वर्ष - 21 दिसम्बर, 2025 अंक - 231

Regd. Postal No. Dehradun-328/2025-27
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक सम्प्रदाय के ऐसे अधिकारी जनों को समर्पित है, जो ऐसी जीवन शिक्षा की खोज में हैं, जो धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित कर पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरो सके और उनका सर्वोच्च आत्मिक हित कर उन्हें प्रकृति के विकासक्रम का साथी बनाकर मनुष्य जीवन को सफल व ख़ुशहाल कर सके।

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : आरती

YouTube Channels

Sadhan Sabhas : Shubhho Roorkee
Motivational : Shubhho Better Life
Workshops : Jeevan Vigyan
Bhajan : Shubhho Bhajan
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मूल्य (प्रति अंक): रु. 9

सम्पर्क सूत्र : **पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु**
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 80778-73846, 99271-46962 (संजय जी)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

इस अंक में

महाशिविर सूचना	03
देवत्व की किरणें	04
गुदगुदी	06
भगवान् देवात्मा का संक्षिप्त....	07
भगवान् देवात्मा का जन्म	10
सच्ची आज़ादी	19
मेरे सतगुरु ने दुनिया में......	20
एक विशेष प्रिंसीपल	21
भाव प्रकाश	23
कृतज्ञता सुमन	25
प्रेरणादायक वर्कशॉप	27
प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	29
पुस्तक वितरण सेवा	32

पत्रिका सहयोग राशि

पत्रिका हेतु सहयोग राशि आप सामने दिये QR CODE या Mission Website - https://shubhho.com/donation./ पर भेज सकते हैं। सहयोग राशि भेज कर Screenshot 81260 - 40312 पर भेजें।

Scan & Pay through any Bharat QR/UPI App

SATYA DHARAM BODH MISSION

Our Bank Details

Satya Dharam Bodh Mission A/c No. 4044000100148307
(PNB) IIT, Roorkee, RTGS/IFSC Code : PUNB0404400

पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी (फ्री) मंगवाने हेतु 81260 - 40312 इस नम्बर पर सूचित करें।

पत्रिका चन्दा

1. रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा (दो माह की पत्रिका एक साथ) – वार्षिक सहयोग – 250/–
2. साधारण डाक द्वारा (प्रति माह) – वार्षिक सहयोग – 100/–
   सात वर्षीय रु. 500, पन्द्रह वर्षीय रु.1000

अधिक जानकारी हेतु सहयोगकर्त्ता

Call/Whatsapp - 81260 - 40312

शुरू कही से भी हो बातें ख़त्म मुस्कुराहटों से ही होनी चाहिए।

महाशिविर सूचना

अपार हर्ष व गौरव की बात है कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 175 वाँ शुभ जन्म महोत्सव हरमिलाप धर्मशाला, साकेत कॉलोनी, रुड़की में बड़ी धूमधाम से दिनांक 17 से 20 दिसम्बर, 2025 को आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आप अवश्य पधारें।

जो जन सेवाकारी बनना चाहते हैं,15 दिसम्बर तक या कुछ और पहले आ जायें। शेष प्रतिभागी 17 दिसम्बर प्रातः 11:00 बजे तक पहुँच जायें तथा 20 दिसम्बर दोपहर बाद प्रस्थान कर सकते हैं। रेल से आने वाले जन तदनुसार रिजर्वेशन करवा लें। आप अपना रजिस्ट्रेशन 81260-40312 पर सूचित करके करवा लें। 'शुभ हो!' परिवार की ओर से सभी को भावपूर्ण निमन्त्रण दिया जाता है।

भजन

मेरे भगवान् आये हैं

गाएं हम गीत खुशियों के, मेरे भगवान् आये हैं;
जगत् ने ज्योतिदाता औ, बलदाता पाये हैं।
असमंजस भ्रम जो फैला था, धर्मजगत् में सदियों से;
उसे वह दूर करने को, लासानी ज्योति लाये हैं।
पाप सागर की लहरों से, जो रूहें डूबने को थी;
बचाने उनको तारणहार, निराली शक्ति लाये हैं।
इन्सानी रिश्तों में छाया, महानरक जो घर-घर;
बनाने स्वर्गीय उसको, वो देव असरों को लाये हैं।
आत्मिक बेसुधि से घटता है, आत्मबल जो रूहों का;
आत्मबोधी बनाने को, मेरे सरताज आये हैं।
महा उत्सव मनाने आज, गुरु सेवक जो आये हैं;
बजाओ तालिया सारे, मेरे भगवान् आये हैं।

26 मई, 2025 प्रातः 4:30 — माध्यम - प्रो.नवनीत अरोड़ा

एक सुखी व स्वस्थ जीवन के लिए अच्छा घर होना इतना ज़रूरी नहीं,
जितना घर का वातावरण अच्छा होना ज़रूरी है।

देवत्व की किरणें

देववाणी – अगर तुम में से किसी का तजुर्बा हो, तो वह देख सकता है कि उच्च भावों के जाग्रत होने पर उसकी क्या हालत होती है और उनसे शून्य होने पर अब उसकी क्या हालत है? यह तजुर्बा तब कोई करेगा, जब उसको आत्मा की कोई कदर मालूम होगी।

– देवात्मा

विस्तृत समझ

यह कथन आत्मा की कद्र और 'उच्च भावों' के अनुभव के महत्त्व पर जोर देता है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं –

"अगर तुम में से किसी का तजुर्बा हो, तो वह देख सकता है कि उच्च भावों के जाग्रत होने पर उसकी क्या हालत होती है और उनसे शून्य होने पर अब उसकी क्या हालत है?"

- उच्च भावों का जाग्रत होना – "उच्च भाव" से तात्पर्य उन भावनाओं से है जो हमें ऊपर उठाती हैं, जैसे – प्रेम, करूणा, कृतज्ञता, शान्ति आनन्द, उत्साह, निःस्वार्थता, दया और क्षमा। ये भाव व्यक्ति को आन्तरिक सन्तुष्टि उद्देश्य और सकारात्मकता की भावना प्रदान करते हैं। जब ये भाव जाग्रत होते हैं, तो व्यक्ति एक विशेष मानसिक और भावनात्मक स्थिति का अनुभव करता है।
- उच्च भावों के जाग्रत होने पर हालत – जब ये उच्च भाव जाग्रत होते हैं, तो व्यक्ति अकसर अधिक शान्त, प्रसन्न, दूसरों से जुड़ा हुआ, ऊर्जावान और जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक महसूस करता है। उसका मन शान्त होता है। क्रोध, ईर्ष्या, भय जैसे नकारात्मक भाव कम होते हैं। उसे जीवन में एक गहराई और अर्थ का अनुभव होता है। यह एक ऐसी अवस्था है जहाँ व्यक्ति स्वयं को अधिक शान्त और सन्तुलित महसूस करता है।
- उनसे शून्य होने पर अब उसकी क्या हालत है? – 'उनसे शून्य होने पर' का अर्थ है जब व्यक्ति इन उच्च भावों से रहित होता है। यह उस स्थिति को दर्शाता है जब व्यक्ति के भीतर प्रेम, करूणा, आनन्द जैसी भावनाएँ नहीं होती या वे निष्क्रिय होती हैं।
- उच्च भावों से शून्य होने पर हालत – जब व्यक्ति इन उच्च भावों से शून्य होता है,

प्रकृति के नियमों की समझ व विश्वास और स्वयं में मेहनत व आत्मविश्वास हो, तो जीवन में कुछ भी प्राप्त करना सहज है।

तो वह अकसर नकारात्मक भावनाओं जैसे क्रोध, चिड़चिड़ापन, भय, अकेलापन, निराशा, असन्तोष और खालीपन से घिरा होता है। उसका मन अशान्त रहता है, उसे जीवन निरर्थक या बोझिल-सा लगता है। वह दूसरों से कटा हुआ महसूस कर सकता है और उसके सम्बन्ध भी प्रभावित हो सकते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति आन्तरिक रूप से अधूरा और परेशान महसूस करता है।

यह हिस्सा व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण करने और इन दो अवस्थाओं के बीच के अन्तर को स्वयं अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह एक तुलनात्मक अध्ययन करने को कह रहा है कि सकारात्मक और उच्च भावनाओं से भरा जीवन कैसा होता है और उनसे रहित जीवन कैसा होता है।

देववाणी में आगे फ़रमाया गया है - "यह तजुर्बा तब कोई करेगा जब उसको आत्मा की कदर मालूम होगी।"

विस्तृत समझ

- आत्मा की कदर (मूल्य/महत्त्व) - यहा 'आत्मा' शब्द के भीतर की कोई अमूर्त चीज़ के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति के गहरे स्व, उसकी चेतना, उसकी आन्तरिक पहचान और उसके वास्तविक स्वरूप के रूप में समझा जा सकता है। 'आत्मा की कदर' का अर्थ है अपने भीतर की सूक्ष्म सत्ता यानि के महत्त्व को समझना, यह जानना कि हम केवल एक भौतिक शरीर नहीं हैं, बल्कि उससे बढ़कर कुछ हैं। इसमें अपनी आन्तरिक शान्ति, आत्मिक ख़ुशी और जीवन के सही उद्देश्य की पहचान करना शामिल है।
- जब कोई व्यक्ति आत्मा के महत्त्व को नहीं समझता, तो उसका ध्यान केवल बाहरी दुनिया, भौतिक सुखों, इन्द्रियों की सन्तुष्टि और सांसारिक उपलब्धियों पर रहता है। उसे आन्तरिक अनुभवों या उच्च भावों का मूल्य समझ में नहीं आता।
- तजुर्बा तब कोई करेगा - यह अनुभव - यानि उच्च भावों की मौजूदगी और गैर-मौजूदगी के बीच के अन्तर को समझना और महसूस करना तभी सम्भव है, जब व्यक्ति 'आत्मा की कदर' करे।
- इसका अर्थ है कि जब व्यक्ति अपनी आन्तरिक दुनिया अपनी चेतना और अपनी आत्मा के महत्त्व को समझना शुरू करता है, तभी वह अपनी भावनाओं और विचारों पर ध्यान देना शुरू करता है। तभी वह उच्च भावों के महत्त्व को पहचानता है और उन्हें सक्रिय रूप से विकसित करने का प्रयास करता है। यदि किसी को आत्मा का मूल्य ही नहीं पता, तो उसे उच्च भावों की अनुपस्थिति से होने वाले खालीपन का

प्रकृति का काम तो सिर्फ़ हमें मिलाना है, लेकिन सम्बन्धों की दूरियाँ या नज़दिकियाँ हमारा व्यवहार ही तय करता है।

एहसास नहीं होगा और न ही वह उन्हें जगाने का प्रयास करेगा। वह बस अपनी बाहरी दुनिया में उलझा रहेगा।

- सारांश में –
- यह देववाणी हमें अपनी आन्तरिक दुनिया की ओर देखने और उच्च भावों के महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करता है। यह कहता है कि वास्तविक आन्तरिक शान्ति और आनन्द का अनुभव तभी हो सकता है जब हम अपनी आत्मा के महत्त्व को समझें और अपने भीतर प्रेम, करूणा जैसे भावों को जाग्रत करे। इन भावों के बिना जीवन खाली और अशान्त महसूस होता है और इस अन्तर को महसूस करने की क्षमता तभी आती है जब हम अपनी गहरी आत्म पहचान (आत्मा) को महत्त्व देते हैं। यह एक प्रकार से आत्म-जाग्रति और आत्म-सुधार की प्रेरणा है।

☺ ☺ ☺ गुदगुदी ☺ ☺ ☺

(1)

एक महिला ट्रेन से यात्रा कर रही थी कि अचानक बिजली चली गई और उसका दिल घबराने लगा। उसने जोर-जोर से जंजीर खींचना शुरू कर दिया। जैसे ही वह जंजीर खींचती तो उसे थप्पड़ पड़ता। जब बिजली आई तो उसने साथ बैठी महिला से पूछा, "जब भी मैं जंजीर खींचती थी तो मुझे थप्पड़ कौन मारता था।"

उस महिला ने कहा, "तुम जंजीर नहीं...मेरे बालों की चोटी खींच रही थी।"

(2)

दो लड़कियाँ बस में सीट के लिये लड़ रही थीं।
कंडक्टर – अरे क्यों लड़ रही हो, जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाये।
फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों लड़कियाँ बस में खड़ी ही रहीं।

(3)

टीचर (विद्यार्थी से) – A B C सुनाओ,
विद्यार्थी – A B C
टीचर (विद्यार्थी से) – और सुनाओ....
विद्यार्थी – और सब बढ़िया, आप सुनाओ।

डर कहता है यह असम्भव है, अनुभव कहता है यह जोख़िम भरा है, तर्क कहता है यह कठिन है, परन्तु साहस कहता है, एक बार प्रयास तो कीजिए सब कुछ संभव है।

भगवान् देवात्मा का संक्षिप्त जीवनव्रत

वंश परम्परा

भगवान् देवात्मा का वैध नाम महामान्य श्रीयुत् सत्यानन्द अग्निहोत्री है। आपका जन्म कानपुर ज़िले में श्री अकबरपुर नामक स्थान में 20 दिसम्बर, 1850 ई0 को हुआ था। वह एक प्राचीन एवं सुप्रसिद्ध कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। आपका गोत्र उपमन्यु था। आपका जन्म एक अति श्रेष्ठ वंश में हुआ।

भगवान् देवात्मा के पूर्वज मूल रूप से उत्तरप्रदेश के ज़िला फतेहपुर के रिवाड़ी नामक स्थान में रहा करते थे। यह नगर श्रीयुत् जर्नादन के सुपुत्र श्रीयुत् रेव ने बसाया था, जोकि भगवान् देवात्मा के पूर्वज थे। इन पूर्वजों ने एक विराट एवं स्मरणीय यज्ञ करवाया था, जिसके कारण ये अग्निहोत्री कहलाए।

भगवान् के पड़दादा जी

उपरोक्त पूर्वजों के कुछ पीढ़ियों के उपरान्त कुछ परिवार रिवाड़ी से दौलतपुर नामक स्थान में चले गए। पण्डित जर्नादन जी के यहाँ कई पीढ़ियों उपरान्त श्रीयुत् मनसा राम जी का जन्म हुआ तथा इनके तीन पुत्र हुए - गंगाप्रसाद, सुखराम एवं बेचूलाल। इनमें से सबसे बड़े श्री गंगा प्रसाद जी भगवान् देवात्मा के पड़दादा जी थे।

वह अद्भुत मानसिक योग्यताओं के स्वामी थे। उनमें ऊर्जा, चतुराई एवं लगन कमाल की थी। अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं एवं परिश्रम से आपने व्यापार में बहुत धन और नाम कमाया। आप अकोड़ी नामक रियासत के दीवान बन गए। समय के साथ आपने दौलतपुर से निवास बदलकर अकबरपुर कर लिया। आपने पच्चीस गाँव खरीद किये एवं एक बहुत बड़े जमींदार बन गए।

भगवान् के दादा जी

सन् 1767 के लगभग दीवान गंगाप्रसाद जी के यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम श्रीयुत् राम जियावन रखा गया। यह ही भगवान् देवात्मा के दादा जी थे। यह बालक असाधारण योग्यताएँ लेकर पैदा हुआ था। उम्र के साथ-साथ उनकी विरासत में मिली आत्मिक शक्तियों की निधि बढ़ती चली गई और शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि इस बालक के जीवन के लक्ष्य लोकोत्तर प्रकार के हैं; लौकिक वस्तुएँ, धनसम्पत्ति आदि नहीं हैं।

स्वाभाविक ही था कि दीवान पिता की यह प्रबल इच्छा हो कि अथक

क्रोध के वक्त दो पल रुकने से और भूल के वक्त झुकने से
हमारी समस्याओं का अन्त हो जाता है।

परिश्रम करके उन्होंने जो नाम, जो यश, जो सम्पत्ति कमाए हैं, उनका पुत्र उसमें रूचि ले तथा उन सबमें वृद्धि करे। किन्तु श्रीयुत राम जियावन के लिए लौकिक धन या नाम के प्रति कुछ भी आकर्षण नहीं था। वह तो मुख्यतया अपनी आत्मा के हित के लिए जीते थे। इसी से वह कभी अकबरपुर गए ही नहीं, दौलतपुर में ही रहे। अपने महिमाशाली पिता की मृत्यु के बाद भी उन्होंने दीवान साहब द्वारा छोड़ी गई जायदाद व नकदी को लेने की कोई कोशिश नहीं की। उस सबको तो उनके सबसे बड़े पुत्र ने सम्भाल लिया था और उन पर उन्हीं का अधिकार था।

भगवान् के दादा जी का दैनिक कार्यक्रम

आपके श्रद्धेय दादा श्रीयुत् राम जियावन जी की दिनचर्या बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। उससे उनके अलौकिक उच्च जीवन-लक्ष्यों का ज्ञान भी होता है। वह प्रातः दो या तीन बजे जाग जाते थे और माला हाथ में लेकर जप किया करते थे। चार-पाँच बजे शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करते थे और फौरन ही 'संध्या' में व्यस्त हो जाते थे। दिन निकल आने पर एक-दो ब्राह्मण-सेवकों को साथ लेकर वह अपने घर से छः मील दूर बहती गंगा पर जाकर वहाँ स्नान करते और फिर भजन में लीन हो जाते थे। गंगा जाते समय वह चींटियों के बिलों में आटा डालते थे। गंगा में मछलियों को आटे की गोलियाँ डालते थे। उन गोलियों के अन्दर छोटे-छोटे कागज के पुर्ज़े डले होते थे, जिन पर राम नाम लिखा रहता था। लगभग बारह बजे वह घर लौटते थे, लौटकर वह तुला में तोला हुआ भोजन करके कुछ विश्राम करते थे। अपराहन में प्रायः तीन बजे वह अपनी बैठक में आ बैठते थे, वहाँ मिलने आने वालों से भेंट करते थे और अपना कामकाज देखते थे। इतना सब करके, वह स्नान करते थे और पूजा में बैठ जाते थे। सोने से पहले प्रायः वह पशुशाला में यह देखने चले जाया करते थे कि घोड़े-गाय आदि सभी पशुओं को चारा ठीक से मिला है कि नहीं तथा वह अपने-अपने खूँटे पर ठीक से बँधे हैं कि नहीं।

इस सबके अतिरिक्त उनकी एक बड़ी विशेषता यह थी कि उनका हृदय अत्यन्त नरम था। किसी की भी दरिद्रता व कष्ट उनके लिए असहाय था। वह लोगों को दरिद्रता के कष्ट से बचाने के लिए या उनकी युवा कन्याओं का विवाह करने के लिए प्रचुर दान दिया करते थे। पाखण्ड से उन्हें हार्दिक घृणा थी। वह तो स्पष्टवादिता व सीधे सच्चे व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध थे। किसी भी प्रकार का मांस व अण्डों का सेवन वह नहीं करते थे, न ही कभी उन्होंने किसी मादक पदार्थ का स्पर्श किया था।

जीवन एक अद्‌भुत सफ़र है जिसमें महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि हम कहाँ
है बल्कि यह है कि हम कैसे आगे बढ़ रहे है।

भगवान् की दादी जी का दैनिक कार्यक्रम

वह एक धार्मिक प्रवृत्तियों वाली महिला थीं। नित्यप्रति भजन-पूजन किया करती थीं। चैत्र तथा आश्विन के महीनों में वह देवी की पूजा के निमित्त नौ-नौ दिन के व्रत रखती थीं। व्रत के दिनों में एक बार फलाहार करती थीं। ईर्ष्या, घृणा आदि विचारों से पूर्णतया मुक्त थीं। उनका किसी से कोई व्यक्तिगत झगड़ा नहीं था। वह बड़ी सरल स्वभाव की महिला थीं।

भगवान् के माता-पिता जी

पिता जी - भगवान् देवात्मा के पिता श्री का नाम श्रीयुत पण्डित रामेश्वर अग्निहोत्री था, जोकि अपने महिमावान् पिता के द्वितीय पुत्र थे। उनका जन्म सन् 1817 ई0 के लगभग हुआ था। वह भी प्रतिदिन ठाकुर की पूजा करते थे और दान देते थे। वह ऊँचे, लम्बे, बलिष्ठ कद-काठी के सुघड़ नाक-नक्श व सुन्दर आँखों के सुदर्शन व्यक्ति थे। घुड़सवारी और कुश्ती जैसे पुरुषोचित व्यायाम किया करते थे। सन् 1857 के ग़दर से पहले वह बन्दूक व तलवार रखते और उनका भलीभान्ति प्रयोग कर सकते थे। उन्हें सिपाहियों जैसी चुस्ती-फुर्ती तथा उन्हीं के जैसी वेशभूषा पसन्द थी। वह अत्यन्त बुद्धिमान, शक्तिशाली तथा आत्मनिर्भर व्यक्ति थे। इसी कारण, पैतृक सम्पत्ति में से अत्यन्त अल्प प्राप्त करने पर भी उन्होंने अपने लिए अच्छा नाम और सम्पत्ति अर्जित कर लिये। उन्हें कविता में भी रुचि थी। अनेक भजन व भक्ति-रस की कविताएँ उन्हें कण्ठस्थ थीं। सफ़ाई व व्यवस्था से उन्हें प्यार था। अपनी वस्तुएँ वह अत्यन्त संभालकर रखते थे। इसके अतिरिक्त यह विशेष बात है कि जब वह परलोक सिधारे, तो उनके पास से भगवान् देवात्मा के उनके लिखे हुए सैकड़ों पत्र सफ़ाई व करीने से बाँधकर रखे हुए मिले। प्रत्येक पत्र पर उसके मिलने की तिथि अंकित थी।

माता जी - भगवान् देवात्मा की माँ एक अत्यन्त उच्च कुल से आई थीं। उनकी प्रकृति भी धार्मिक व भक्ति भावना से भरपूर थी। उन्हें बाह्य स्वच्छता और निर्मलता भी अच्छी लगती थी। वह प्रतिदिन स्नान तो करती ही थीं, साथ ही जब भी शौच जातीं, तो आकर सम्पूर्ण शरीर का प्रक्षालन करती थीं। यह महत्त्वपूर्ण है कि उनके अद्वितीय पुत्र ने अपने विश्वासों के प्रकाश में ऐसी अनेक अनुचित परम्पराओं को छोड़ दिया था व ऐसी अनेक अनुचित मान्यताओं को तिलांजलि दे दी थी, जिनको वह स्वयं निष्ठापूर्वक मानती थीं, फिर भी उनका पुत्र से कभी झगड़ा नहीं हुआ, न ही कभी वह पुत्र के विकास मार्ग में बाधा बनीं।

आपका शान्त एवं स्थिर दिमाग़ आपके जीवन की
प्रत्येक लड़ाई का ब्रह्मास्त्र है।

भगवान् देवात्मा का जन्म

भगवान् देवात्मा के माता-पिता के घर पहली सन्तान एक कन्या हुई थी, जो कि शैशव में ही चल बसी थी। उसके बाद दस वर्षों तक उनके घर कोई सन्तान नहीं जन्मी। अधिकांश हिन्दू माता-पिता सन्तान, विशेषकर पुत्र सन्तान को उत्पन्न करना तथा अपने पीछे छोड़ जाना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। यदि कई वर्षों तक पुत्रोत्पत्ति न हो तो हिन्दू माता-पिता इसके लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनेक प्रकार की धार्मिक क्रियाएं किया करते थे। पण्डित रामेश्वर अग्निहोत्री तथा उनकी निष्ठामयी धर्मपत्नी ने भी अनेक वर्ष तक सन्तानोत्पत्ति की प्रतीक्षा करने पर अनेक धार्मिक साधन किए। अनेक व्रत-उपवास, दान, धार्मिक ग्रन्थों का पाठ और तपस्या आदि किए गए। मनुष्यों व पृथ्वी, जल और आकाश के पशु-पक्षियों को जिमाया गया। कई प्रकार के साधन किए गए। अपने सौभाग्यशाली माता-पिता की इसी गहरी धार्मिक मानसिकता के दिनों में भगवान् देवात्मा का उनके घर में पुत्र रूप में जन्म हुआ। वह पुत्र, जो अपने माता-पिता के लिए असीम आनन्द लाया, जो संसार का भावी प्रकाश, आनन्द व आशा और पूर्णांग आध्यात्मिक उच्च जीवन का अद्वितीय अवतार था, जो दुनिया के एकमात्र सत्य विज्ञानमूलक देवधर्म का प्रकाशक था, जो मानवता को प्रत्येक प्रकार के नीच अनुराग व नीच घृणा से बचाने वाला था - वह नीच अनुराग व नीच घृणाएँ जो कि विभिन्न पापों-मिथ्याओं-कल्पनाओं-नीच मोहों के कारण बनते हैं - और जो इस जगत् के सभी अधिकारी आत्माओं के लिए उच्च जीवन का विकासकर्त्ता था।

भगवान् देवात्मा के जीवन का प्रथम चरण

यूँ तो भगवान् देवात्मा का जन्म भी उन्हीं प्राकृतिक नियमों के अधीन हुआ था, जिनके द्वारा प्रत्येक मानव शिशु अपना भौतिक जीवन प्राप्त करता है, परन्तु अपनी विशेष व अद्वितीय शक्तियों के कारण जिन्हें इन्होंने जन्म से ही बीजरूप में प्राप्त किया था, वह एक अति विशिष्ट व असामान्य व्यक्तित्व के रूप में उभरे। उनका चरित्र व उनका व्यवहार उस अपूर्व विशेषता से मण्डित था।

जहाँ तक शारीरिक गठन, भौतिक क्रियाओं तथा बौद्धिक शक्तियों का प्रश्न है, भगवान् देवात्मा का विकास भी अन्य सामान्य बालकों के समान ही हुआ। किन्तु ज्यूँ-ज्यूँ समय बीतता गया, अन्य मनुष्यों व उनमें अन्तर पैदा होता गया और बढ़ता गया। इस अन्तर का कारण था उन अद्वितीय आत्मिक शक्तियों का विकास,

विचारों से असहमत होते हुए भी सहमति के बिन्दुओं को खोजना
सुखी रहने का मूल मन्त्र है।

जिन्हें उन्होंने बीजरूप में प्राप्त किया था। वे आत्मिक शक्तियाँ थीं - सत्य एवं हित का पूर्णांग विकासात्मक अनुराग तथा असत्य एवं अशुभ का पूर्णांग एवं विकासात्मक अनुराग।

महान् विभेदक रेखा - मानवता आज तक स्वभाव से ही आनन्द एवं सुखदायक तत्वों के प्रति आकर्षित होती आई है। आनन्द अथवा इन्द्रिय व मानसिक सुख को ही आत्यन्तिक लक्ष्य माना जाता है और अरूचिकर तथा दुःखप्रद के प्रति एक विकर्षण अनुभव किया जाता है, चाहे वह 'सुख' कई स्थितियों में आवांछित परिणाम उत्पन्न कर दे और वह 'दुःख' शुभ की ओर ले जाए। भगवान् देवात्मा ने अपने बालपन से ही अपने तत्कालीन ज्ञान के अनुसार शुभ के लिए आकर्षण तथा अशुभ व अनुचित के प्रति घृणा का प्रकाश किया, बिना इसका विचार किए कि इससे उन्हें सुख मिलेगा या दुःख, आनन्द मिलेगा या पीड़ा।

कुछ उदाहरण -

(1) पुराने हिन्दू रीति-रिवाजों के अनुसार धनी परिवारों के लड़के भी त्यौहारों तथा अन्य अवसरों पर स्वर्णाभूषण पहनते थे। उनके माता-पिता ने जब उनका बारह वर्ष की आयु में विवाह किया, तो उन्हें भी आभूषणों से सजा दिया। लगभग तेरह वर्ष की आयु में भगवान् देवात्मा ने एक पुस्तक में पढ़ा कि बच्चों के शरीर पर आभूषण पहनने से बड़ी बुराइयाँ जन्म लेती हैं, क्योंकि इससे चोर ललचाते हैं तथा कभी-कभी तो गहनों के लिए लोग बच्चों की हत्या तक कर डालते हैं। उन्होंने उसी समय अपने आभूषण उतार दिये यद्यपि उनके इस कृत्य से उनके माता-पिता अप्रसन्न हुए। उनमें बुराई का अस्वीकार इतना प्रबल था कि अपने द्विरागमन (वधू को उसके माता-पिता के घर से अपने घर ले आने का संस्कार) के अवसर पर भी उन्होंने थोड़ी देर के लिए भी आभूषण पहनना कतई स्वीकार नहीं किया, हालाँकि उन्हें इसके लिए बार-बार कहा गया, क्योंकि रीति-रिवाज ऐसे ही थे।

(2) जब वह बालक थे, तभी उनको प्रतीत हो गया था कि अज्ञान एक बुराई है तथा शिक्षा की प्राप्ति उनके लिए श्रेयस्कर है। उनके स्वभाव की विशेषता यह थी कि वह किसी अच्छी बात को जान लेने पर उस पर अमल भी करते थे तथा उसे प्यार भी करते थे। यह स्वभाव, आयुवृद्धि के साथ-साथ अधिकाधिक विकसित होता

जो व्यक्ति अपनी निन्दा सुनने के बाद भी शान्त रहता है, वह सम्पूर्ण जगत् पर विजय प्राप्त कर सकता है।

चला गया। और जब उन्होंने गाँव की पाठशाला की शिक्षा समाप्त कर ली तो उनकी आत्मा और अधिक मानसिक विकास का अवसर प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो उठी। इसलिए उन्हें जैसे ही अवसर मिला, उन्होंने रुड़की कॉलेज की प्रवेशिका की परीक्षा (इन्ट्रैन्स एग्ज़ामिनेशन) पास कर ली। अब कॉलेज जाने का प्रश्न सामने था। माता-पिता ने उनके इतनी दूर जाने का विरोध किया, परन्तु उन्होंने अत्यन्त दृढ़तापूर्वक अपना वहाँ जाने का निश्चय उन्हें बता दिया और स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि यदि वे लोग उन्हें जाने की अनुमति नहीं देंगे, तो वह घर से भाग जायेंगे। इस बात का अपेक्षित परिणाम निकला। माता-पिता से उन्हें अगली पढ़ाई के लिए रुड़की इन्जीनियरिंग कॉलेज में जाने की आज्ञा मिल गई।

(3) बाल्यावस्था से ही उनका विश्वास था कि शिक्षा जैसी पुरुषों के लिए हितकर है, वैसी ही स्त्रियों के लिए भी। इसी कारण वह स्वयं अपनी भाभी एवं भतीजी को पढ़ाने लगे और वह भी उन्नीसवी शताब्दी के छठे दशक में - जबकि स्त्री शिक्षा को अशुभ व अमंगलकारी समझा जाता था।

(4) आपके हृदय में करुणा व दया भाव गिलहरी की घटना से स्पष्ट होता है (देखें पृष्ट -7, सत्य देव संवाद नवम्बर, 2025 अंक)

(5) आपमें कर्त्तव्य बोध बहुत उच्च स्तर का था, कबूतरों वाली घटना से वह स्पष्ट होता है (देखें पृष्ट -8, सत्य देव संवाद नवम्बर, 2025 अंक)

(6) बड़ों के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता - भगवान् देवात्मा में अपने माता-पिता व गुरु जनों के लिए सच्ची श्रद्धा और आदर की भावना थी। इसी कारण वह उनके सामने तो उचित सम्मान देते ही थे, उनके पीछे भी उन्हें उचित सम्मानपूर्वक स्मरण करते थे। अपने माता-पिता के प्रति वह गहरी कृतज्ञता अनुभव करते थे। उनके काम व अत्यन्त प्रसन्नता से एवं मन लगाकर करते थे तथा अनेक प्रकार से उनकी सेवा किया करते थे। भगवान् देवात्मा अनेक बार जानबूझकर अपने प्रमुख अध्यापक के घर जाया करते थे, ताकि वह उनके घर में उनकी कुछ सेवा कर सकें।

(7) अपनी प्रतिज्ञाओं पर अटल रहने का भाव - बालपन से ही भगवान् देवात्मा बड़े धार्मिक थे। विभिन्न प्रकार की पूजा-पाठ के अतिरिक्त वे अनेक व्रत रखा करते थे। अल्पायु के होते हुए भी वह व्रत रखने में इतने पक्के थे कि एक बार व्रत रख लेने पर वह सुबह से आधी रात तक एक बून्द पानी भी अपने सूखे गले से नीचे

परायों को अपना बनाना उतना मुश्किल नहीं जितना, अपनों
को अपना बनाए रखना।

नहीं उतारते थे। व्रत-पालन के प्रति ऐसी निष्ठा थी उनमें।

(8) आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता एवं मनोयोग - इन सबके अतिरिक्त बाल्यकाल से ही वे जो कुछ भी करते थे, पूरे मनोयोग से करते थे। उनमें आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता के भाव भी अत्यन्त गहन थे।

भगवान् देवात्मा के जीवन का द्वितीय चरण

भगवान् देवात्मा ने अपने जीवन के आरम्भिक लगभग सोलह वर्ष अपने जन्म स्थान पर ही बिताए। जब वहाँ उपलब्ध सारी शिक्षा उन्होंने प्राप्त कर ली तो उनके स्नेही माता-पिता ने उनकी विरासत में प्राप्त अद्वितीय शक्तियों तथा परिणामी गौरवपूर्ण भविष्य का लेखा-जोखा लिये बिना ही यह मान लिया कि उनकी वह शिक्षा काफ़ी है। ऐसा इस कारण भी हुआ क्योंकि उनकी इच्छा थी कि उनका पुत्र उनके पास ही रहे। यह उन्हें पता ही नहीं था कि उनके पुत्र की अनोखी आत्मा में शिक्षा के प्यार का पुष्प विकसित हो चुका है। वे नहीं जानते थे कि उस गाँव की भूमि उनके आगामी विकास के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करने में असमर्थ है। उनकी अनोखी शक्तियाँ तो आगे तथा उच्चतर परिस्थितियों की आकांक्षी थीं तथा उसे प्राप्त करने के लिए मौन रुदन कर रही थीं। इसी से जब उन्हें एक हल्की-सी सम्भावना दिखाई दी कि रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज में आकांक्षी नवयुवकों को आगे शिक्षा मिल सकती है, तो उनके हृदय में स्थित शिक्षा के प्यार की चिन्गारी तत्काल ही एक प्रज्वलित शिखा बन गई और यह ज्वाला फिर कभी मन्द नहीं हुई। वह तत्काल ही प्रवेशिका परीक्षा में बैठे और अपने माता-पिता की इच्छा तथा अन्य बाधाओं का अतिक्रमण करके शीघ्र ही जाकर रुड़की कॉलेज में दाखिल हो गए। क्या यह अत्यन्त विचित्र बात नहीं है कि जहाँ तक हम जानते हैं, उस स्थान से, उसके पचास वर्ष बाद तक भी कोई अन्य बालक रुड़की कॉलेज में पढ़ने नहीं गया?

उन्होंने लगभग सोलह वर्ष की आयु में टॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज, रुड़की में प्रवेश लिया था। उनका कर्त्तव्य बोध तथा ज्ञान-प्रेम उन्हें पुस्तकों से ही बाँधे रखते थे। आगे चलकर जब कुछ देर आगरा नहर पर काम करने के उपरान्त उनका स्थानान्तरण रुड़की कॉलेज में हो गया था, तो उन्होंने प्राइवेट तौर पर ही पढ़ाई करके अंग्रेज़ी पढ़ी तथा ओवरसियर की परीक्षा पास कर ली। उस डिग्री की बदौलत, आगे जाकर उन्हें हैड सर्वेइंग मास्टर का पद मिला।

दर्द एक संकेत है कि आप ज़िन्दा हैं, समस्या एक संकेत है कि आप मजबूत हैं,
दोस्त और परिवार एक संकेत है कि आप अकेले नहीं हैं।

शिक्षक के रूप में भगवान् देवात्मा ने अपने दैनिक व्यवहार में भी एवं परीक्षक के रूप में भी कार्य करते हुए भी ऐसी उच्च न्यायपराणता, अनुशासन व व्यवस्थितता का प्यार तथा उच्च उत्तरदायित्व-बोध का परिचय दिया कि उनके प्रिंसीपल कर्नल लैंग ने अपनी रिपोर्ट में उनके बारे में लिखा –

"मैंने पहले ही अपने प्रमाण-पत्र में इनकी लगन व क्षमताओं के बारे में अपनी उच्च राय का प्रकाश किया था। अब यह पुनः इस कॉलेज में आ गए हैं और डेढ़ वर्ष तक....इन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता व स्फूर्तियुक्त व्यक्तित्व को यथावत् रखा है, लगातार अपनी अंग्रेज़ी का ज्ञान तथा विद्या की विविध शाखाओं की शिक्षा को बढ़ाते रहे हैं। इनके पास नव-आयु, ऊर्जा व क्षमताओं की सम्पत्ति है और यदि यह इसी प्रकार विकास करते रहे तो निश्चय से ही एक महान् व प्रसिद्ध हस्ती बनेंगे।"

गुरु धारण – ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान् देवात्मा का रुड़की में प्रवेश मात्र शिक्षा-ग्रहण के लिए नहीं, अपितु उससे कहीं बढ़कर किसी उच्चतर लक्ष्य के लिए हुआ था। सम्भवतः इसी कारण वहाँ एक घटना घटी जिसका महत्त्व अत्यन्त दूरगामी था। हुआ यूँ कि होली का अवसर था। भगवान् अपने अन्य साथियों समेत होली मनाने अपने एक शिक्षक के घर गए। उस अवसर पर उस घर में एक विलक्षण हस्ती विद्यमान थीं। भगवान् देवात्मा ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। उस महान् आत्मा ने भी भगवान् को पहले कभी नहीं देखा था। फिर भी जैसे ही इन दोनों ने एक-दूसरे को देखा, एक विचित्र हार्दिक आकर्षण पैदा हुआ। यही उनका परस्पर परिचय था। कोई तीसरा व्यक्ति वहाँ उपस्थित नहीं था। भगवान् देवात्मा की अद्वितीय विकासशील शक्तियाँ तो अपना विशेष वातावरण ढूँढती ही थीं। यह आकर्षण एक निःशब्द अनचीन्हा पर बड़ा सशक्त व महत्त्वपूर्ण सात्विक आकर्षण था।

इस अनोखे व्यक्तित्व का नाम था श्री शिवदयाल सिंह। ऐसे अनोखे व्यक्ति के संसर्ग ने भगवान् देवात्मा के आन्तरिक जीवन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निभायी। अपने इस गुरु से उन्होंने त्याग की गहरी भावना प्राप्त की। त्याग परिवार, अन्य सम्बन्धी अथवा कर्त्तव्यों व उत्तरदायित्वों का नहीं, अपितु नीच सुख देने वाले, नीच अनुरागों का, दुनियवी खुशियों का और ईर्ष्या, द्वेष आदि आत्मविनाशी उन शक्तियों का जो मानव के स्वास्थ्य, मानसिक शक्ति, उच्च सुख व उच्च जीवन का नाश कर देती हैं। आत्म-कल्याण का गहरा भाव भी उनसे प्राप्त किया। भगवान् ने इन दो प्रबल शक्तियों के साथ-साथ कुछ तत्त्वों जैसे यौन-अशुचिता, बद-दयानती

जब तक जीवन है उसमें परिवर्तन और प्रयत्न के
लिए अवसर और सम्भावनाएं हैं।

के लिए घोर वितृष्णा तथा कुछ अन्य तत्त्वों यथा वायदा निभाना, दया, कृतज्ञता, कर्त्तव्य बोध, धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, पूजा, दैनिक साधना आदि के प्रति गहरा अनुराग भी विकसित किया। आत्मिक जीवन का कैसा अनूठा कोष! भला भगवान् अपने गुरु में इतनी श्रद्धा व निष्ठा से अनुरक्त क्यों न होते? आपने 08 जुलाई, 1870 ई0 को अपनी धर्मपत्नी सहित इन्हें विधिवत रूप से गुरु ग्रहण किया।

भगवान् देवात्मा के जीवन का तृतीय चरण

सन् 1872 का अगस्त मास था। भगवान् देवात्मा के परम प्रिय गुरु ने अन्तिम साँस ली। और उस दुःखद घटना के बाद भगवान् के लिए रुड़की का सारा आकर्षण, सारा सम्मोहन नष्ट हो गया। अब भगवान् की अद्वितीय शक्तियों के विकास के लिए रुड़की में कोई साधन नहीं थे। भगवान् की यह ही अद्वितीय शक्तियाँ तो उन्हें रुड़की लेकर आई थीं। प्रकाशतया तो उन्हें वहाँ लाने का उद्देश्य शिक्षा-प्राप्ति था, परन्तु वास्तविकता कुछ और ही थी। वास्तव में वह उस विस्मयकारी व्यक्तित्व से मिलाने ले आई थीं जिसने भगवान् को अनोखे व अज्ञात लक्ष्य की ओर चलने वाली अद्वितीय यात्रा के एक विशेष बिन्दु पर एक स्नेही निर्देशक का कार्य किया और उन्हें एक विशेष मंज़िल पर पहुँचाया। फिर एक समय ऐसा आया कि गुरु का आकस्मिक निधन हो गया व रुड़की आपके लिए सूनी हो गई, तब उनके प्रिंसिपल महोदय कर्नल लैंग ने भगवान् को परामर्श दिया कि उन जैसे प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति के लिए पंजाब की राजधानी लाहौर सर्वाधिक उपयुक्त स्थान है। इस प्रकार वह प्रिंसिपल महोदय अनजाने में ही आगे चलकर देव तेज के सूर्य के रूप में चमकने वाले व्यक्ति के लिए उनके अद्वितीय लक्ष्य को लेकर की जाने वाली अद्वितीय यात्रा के एक चरण में सहायकारी होने का श्रेय अनायस ही पा गए।

लाहौर में भगवान् को विकास के लिए उपयुक्त वांछित वातावरण प्राप्त हुआ। उनके अन्तर्निहित शिक्षा के प्यार ने उन्हें अंग्रेज़ी भाषा पर विशिष्ट अधिकार प्राप्त कर लेने के लिए प्रेरित किया। वह दर्शन, धर्म, नीति और राजनीतिक साहित्य के अध्ययन में डूब गए। शीघ्र ही वह लाहौर के जनाकाश में एक ज्वलन्त नक्षत्र के समान चमक उठे। उनकी प्रसिद्धि एक विशेष वक्ता, एक सशक्त लेखक, एक प्रभावी प्रचारक, एक महान् समाज-सुधारक के रूप में हो गई। असलियत तो यह थी कि वह अति शीघ्र ही लाहौर या पंजाब में जीवन के एक अनिवार्य तत्त्व बन उठे थे। बिना

काँच हमेशा चुभता है लेकिन अगर उसे आईना बनाया जाता है
तो हर कोई उसे देखता है।

किसी से सीखे, बिना किसी से निर्देश लिये, उन्होंने दो पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ कर दिया, एक उर्दू में और एक हिन्दी में। सत्य एवं शुभ के प्रेम ने उन्हें मानव के नैतिक उत्थान के लिए प्रधान शक्ति बना दिया। उन्होंने अपना जीवनव्रत 20 दिसम्बर, 1882 ई0 को एक ऐतिहासिक सभा में ग्रहण किया। अपना जीवनव्रत उन्होंने स्वरचित पद्य के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया -

सत्य, शिव, सुन्दर ही, मेरा परम लक्ष्य होवे!
जग के उपकार ही में, जीवन यह जावे!!

भगवान् देवात्मा के जीवन का चतुर्थ चरण

15 जनवरी, 1883 ई0 के दिन भगवान् देवात्मा ने अपने जीवनव्रत व परम लक्ष्य के सम्बन्ध में विस्तार से बताया। अन्य बातों के अतिरिक्त उन्होंने कहा -

"मेरा लक्ष्य आत्मा के जीवन के साथ दृढ़ता से बँधा है। अब प्रश्न यह है: क्या यह मेरा मिशन किसी विशेष सुधार के साथ सम्बन्ध है जैसा कि यूरोप में मार्टिन लूथर का अथवा भारत में अन्य सुधारकों का था? नहीं! मेरा जीवन-लक्ष्य तो है 'धर्म जीवन।' इसका अर्थ यह है कि मेरा लक्ष्य है मानवों के हृदय में सच्चा चरित्र उत्पन्न करना और एक नैतिक व आत्मिक प्रभाव सर्जित करना। तब क्या किसी भी सुधार कार्य के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है? सम्बन्ध है! परन्तु यदि कोई तत्त्व मेरे लक्ष्य पूर्ति के मार्ग में एक बाधा बनकर आगे आता है तो उसे मुझे हटाना ही होगा। यह हमें समझ लेना चाहिए कि सुधारक का कार्य बाह्य होता है। मेरा कार्य-क्षेत्र आन्तरिक जीवन होगा। जो मात्र सुधारक होता है, वह तो उन बुराइयों को सुधारना चाहता है, जो समाज को कष्ट पहुँचाती हैं। उसका मानव के हृदय में आन्तरिक परिवर्तन लाने की समस्या से कुछ लेना-देना नहीं होता है। वह तो वृक्ष की कुछ शाखाएँ काट-छाँट देता है और बस! किन्तु जो व्यक्ति सच्चे धर्म जीवन को अथवा उच्च जीवन को अपना लक्ष्य बनाकर चलता है, वह तो एक नाशोन्मुख वृक्ष को उसकी जड़ों में जीवन-जल डालकर पुनःजीवित करने का उद्देश्य रखता है।"

वह इस बात का विचार करते ही नहीं थे कि उनके द्वारा चुना गया मार्ग उनके लिए शत्रु पैदा कर रहा है अथवा मित्र, उन्हें दुनिया सम्मान की दृष्टि से देख रही है अथवा अवमानना की दृष्टि से, उनके साथ बहुत-से अनुयायी हैं अथवा वह अकेले ही

मधुर सम्बन्ध केवल बोले गए शब्दों पर आधारित नहीं होते, बल्कि भावनाओं को समझने पर भी निर्भर करते हैं।

चले जा रहे हैं, धन है या निर्धनता, यश है अथवा अपयश! वह तो अपने बढ़ते आन्तरिक प्रकाश का ही अनुसरण करते थे। इसलिए ऐसे हालात बनते चले गए कि उन्हें ब्रह्म समाज से सम्बन्ध तोड़ना पड़ा और 16 फरवरी, 1887 ई0 को देवसमाज की नींव डाली। समय के साथ इस विकासवादी आत्मा ने धर्म का आधार परम्परागत विश्वासों से हटकर प्रकृति के आधार पर परिभाषित किया। उस दिन उन्होंने पंजाब की राजधानी लाहौर में देवधर्म (एकमात्र सच्चा विज्ञानमूलक धर्म) की पताका फहराई। उस समाज ने दिन दुगुनी व रात चौगुनी उन्नति की तथा बुराई करने वालों की भी प्रशंसा अर्जित की। उनके अनुयायियों के उच्च जीवन के लिए सर्वत्र प्रशंसा होने लगी।

देवसमाज की स्थापना के साथ भगवान् देवात्मा के कार्य का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। अब उन्हें अपने जीवनव्रत के लिए कार्य करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। प्रारम्भ में तो वह सभी जनों को ईश्वर द्वारा भेजे गए समझकर, अपने समाज में स्वीकार कर लेते थे। परन्तु ज्यों-ज्यों उनका अनुभव बढ़ता गया, मानवीय स्वभाव के बारे में सत्य उनके समक्ष प्रकट होने लगे। अतः उन्होंने देवसमाज के संविधान में नए क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। देवसमाज के सदस्य के लिए उन्होंने एक नया शब्द 'सेवक' आरम्भ किया। सदस्यता के लिए कुछ शर्तें रखीं, जिनके अन्तर्गत इच्छुक व्यक्ति को कुछ प्रमुख पाप छोड़ने होते थे।

सन् 1892 में उन्होंने कुछ यज्ञों की व्यवस्था की स्थापना की। उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत माता-पिता, भाई-भगिनी, पति-पत्नी, स्वामी-सेवक, परलोकवासी आत्माएँ, वनस्पति जगत्, पशु जगत्, भौतिक जगत्, मनुष्य मात्र और भगवान् देवात्मा आदि के साथ मानव के सम्बन्धों के बारे में विचार करने के लिए वर्ष के विभिन्न भाग निर्धारित कर दिए गए। इन दिनों में इन यज्ञों के साधन द्वारा उन सम्बन्धों में भगवान् देवात्मा की देवज्योति में अपनी कमियों को देखने, उनको दूर करने, उनके सम्बन्ध में सेवा कृतज्ञता श्रद्धा आदि उच्च भावों को उत्पन्न करने के अभ्यास का प्रावधान रखा गया। आज तो यह प्रावधान अत्यन्त सुन्दरता से विकसित यज्ञों और व्रतों की एक पूर्ण परिपाटी के रूप में पनप चुका है।

उन्होंने विश्व का आह्वान किया कि लोग आएँ - उनकी अद्वितीय ज्योति का दान लेने जिसके प्रकाश में आत्मा की प्रकृति बुराई के जीवन व मिथ्या विश्वासों की आतंकप्रद हानियाँ, मानव का सर्वोच्च लक्ष्य तथा उनकी (भगवान् की) वे अति

धनवान बनने के लिए एक-एक कण का संग्रह करना पड़ता है और गुणवान बनने के लिए एक-एक क्षण का सदुपयोग करना पड़ता है।

अद्वितीय देव-शक्तियाँ दिखाई दे सकती हैं जो कि उन्हें नीच व क्षुद्र जीवन और मिथ्या विश्वासों से मुक्ति दिला सकती हैं तथा उनमें उच्च भाव विकसित कर सकती हैं।

(घ) विज्ञानमूलक धर्म-व्यवस्था की उद्घोषणा - उनके सामने एक विशद कार्यक्रम की योजना बनाने का कार्य था। उन्हें अपनी आन्तरिक प्रकृति का निर्देशों का पालन करते हुए तथ्यों एवं प्राकृतिक नियमों के आधार पर निम्नलिखित समस्याओं के सम्बन्ध में अनुसन्धान करना था - (1) आत्मा की गठन, (2) भौतिक शरीर से उसका सम्बन्ध, (3) उसके विकास की प्रकृति एवं परिस्थिति, (4) उसका पतन, क्षय और नाश, (5) उसका वास्तविक लक्ष्य अथवा ब्रह्माण्ड के एक भाग के रूप में उसके अस्तित्व का आत्यन्तिक प्रयोजन। यह समस्त खोज कार्य वह चार वर्षों तक करते रहे। अन्ततः उन्होंने मानव आत्मा के चैतन्य अथवा आत्मिक गठन के विकास एवं विनाश सम्बन्धी वह अद्वितीय सत्य खोज लिए जिन पर उन्होंने 'आत्मा के विज्ञान' अथवा एकमात्र सत्य विज्ञानमूलक धर्म की नीव रखी, वह धर्म जिसने की मानव के धर्मों के इतिहास में एक नया युग उत्पन्न कर दिया। यह घोषणा 28 दिसम्बर, 1898 को की गई थी।

इस प्रकार आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान् देवात्मा की ज्योति द्वारा वह सारा अन्धकार मिटा दिया गया, जोकि धर्म के पवित्र, स्वच्छ व निर्मल आकाश पर फैला रखा था, जो कि सदियों से चला आ रहा था, जिसके द्वारा गहरा अन्धकार उत्पन्न हो उठा था, जिसने अकथ कष्टों को जन्म दिया था, रक्त की नदियाँ बहाई थीं। मानवता ने वास्तव में विचार और जीवन के एक सर्वथा नए जगत् में प्रवेश किया।

यह सत्य है कि प्रचीन विश्वासों के अन्धकार की अभ्यस्त आँखें इस नए चकाचौंध को देख पाने में असमर्थ थीं। यह सत्य है कि इस नए युग से षड्यन्त्रकारियों-लोभियों-पाखण्डियों के सुरक्षित दुर्गों के ध्वंस हो जाने की सम्भावनाएँ जाग उठी थीं। यह भी सत्य है कि विश्वभर में कभी भी कोई एक व्यक्ति इतनी भयंकर यन्त्रणाओं की हृदयविदारक पीड़ाओं का शिकार नहीं बना जितना कि भगवान् देवात्मा। यह भी नितान्त सत्य है कि किसी भी एक व्यक्ति को कभी भी इस प्रकार लगातार निर्दयतापूर्वक अपमानित भी नहीं किया गया, जितना कि भगवान् देवात्मा को किया गया। लेकिन आपका यह अद्वितीय संग्राम वृथा नहीं गया।

इस प्रकार संसार को उच्चतम आदर्श चरित्र का आराध्य देव मिला।

यदि आप में शुरू करने के लिए साहस है, तो आपमें
सफल होने का भी साहस है।

विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा से मानवता निहाल हो गई। एक निराला मिशन मिला, जिससे अधिकारी आत्माओं का सच्चा हितसाधन होने लगा। काश, हम उनके महान् रूप, उनके महा दान को अधिक से अधिक उपलब्ध करके अपने महा सौभाग्य को सराह सकें!

– (श्रीमान् पी.वी. कनल जी द्वारा लिखे लेख पर आधारित)

निर्णय समझकर लें

जीवन एक मिनट में नहीं बदलता, किन्तु एक मिनट में लिया गया निर्णय कई बार पूरे जीवन को पलटकर रख देता है। इसलिए, बहुत ज़रूरी है कि बहुत शान्त मन से सोच-समझकर निर्णय लेने का अभ्यास डालें।

सच्ची आज़ादी

गुनाहों से कभी खाली मेरा हिन्दुस्तां होगा,
जो पापों से मिले मुक्ति तो वो जन्नत निशां होगा।
बहार आएगी गुलशन में निराले फूल खिलेंगे,
जो सच्चा सतगुरु रहबर हमारा बागबां होगा।
जलाकर झाड़ियाँ काँटे भरी वो नीच भावों की,
मोओतिर उच्च भावों के गुलों से गुलिस्ताँ होगा।
हर एक रिश्ते में हितकर प्रेम और सम्बन्ध हो कायम,
दरिन्दा जो बना इन्साँ, वो इक दिन बेजियाँ होगा।
तराने गाएंगे हर दम गुरु की याद में हम सब,
जन्मदिन उनका आजादे, भारत का निशां होगा।
गुनाहों और पापों से जो मिल जाएगी आज़ादी,
स्वराज और किसको कहते हैं, यह राज हम पर अयाँ होगा।
दुआ गो शाम है हर साल, आए वह सुनहरा दिन,
हमारा सिजदा होगा और गुरु का आस्ताँ होगा।

सत्य देव संवाद, जनवरी सन् 1940

मार्गदर्शन सही हो तो एक नन्हा सा दीपक भी किसी सूरज से कम नहीं।

मेरे सतगुरु ने दुनिया में अजब लीला रचाई है

मेरे सतगुरु ने दुनिया में, अज़ब लीला रचाई है,
बचाने के लिए रुहों को, यह बस्ती बसाई है।
निराले देव असरों से, जगाया दुनिया वालों को,
धुले जिसमें नहाकर पाप, वो गंगा बहाई है।
छुड़ाकर नीच रागों से, बचाई सैकड़ों रुहें,
लगी जो आग थी हृदयों में, सतगुरु ने बुझाई है।
हुए बरबाद जो घर थे, वो सतगुरु ने बसाए हैं,
लुटेरे डाकुओं की ज़िन्दगी, फिर से बसाई है।
दिखाई दे रहा है, मेल कितने ही घरानों में,
सच्चाई और भलाई की, जगत् में रौ बहाई है।
स्थापन कर विकासालय, किया उपकार दुनिया पर,
अज़ब आला वजूदों की नई इक नगरी बनाई है।
लगाई पाँव से ठोकर, जिन्होंने अदना चीज़ों पर,
उन्हीं के दिल में सतगुरु की, छवि सुन्दर समाई है।
शरण देवगुरु की पाकर, बची श्रद्धेया कुमारी जी,
जिनकी याद फिर फिरकर, दिलों में आज आई है।
है आती याद देवत्व सिंह की, इस पाक अवसर पर ,
जिन्होंने देवगुरु के चरणों में, लौ दिल की लगाई है।
नज़र आते हैं मुझको, धर्मबल जी और निर्मल सिंह जी,
कृपा से जिनकी 'शैदा' ने, शरण गुरु देव की पाई है।
करूँ धन्यवाद मैं अपने, प्यारे देवगुरु जी का,
जिन्होंने डूबती नैय्या मेरी, फिर से बचाई है।
यही है कामना 'शैदा' की, अपने दिल के रहबर से,
पाऊँ मैं धर्म का जीवन, असल में जो कमाई है।

गोपाल दास शैदा
'सत्य देव संवाद' 1950

दो बातों की गिनती करना छोड़ दें, खुद का दुःख और दूसरों का सुख
ज़िन्दगी आसान हो जायेगी।

एक विशेष प्रिंसीपल

मैं एक अध्यापिका के रूप में कई स्कूलों में कार्य कर चुकी हूँ। लेकिन एक विशेष प्रिंसीपल जिनके जीवन व व्यवहार से बहुत ज़्यादा प्रभावित हुई, उनके बारे में कुछ लिखने की कोशिश कर रही हूँ। यह गुण चिन्तन करने की प्रेरणा मुझे भगवान् देवात्मा की शिक्षा से मिली, जिसके लिए मैं उनकी दिल से शुक्रगुजार हूँ।

उपरोक्त विशेष प्रिंसीपल हैं - श्री सतविन्द्र सिंह जी बेदी। आप सनसाइन एकेडमी, पुरकाजी (रुड़की से 28 कि.मी. दूर) के मालिक व प्रिंसीपल हैं। सन् 2022 में मुझे इनके स्कूल में अध्यापिका के रूप में काम करने का मौका मिला। इससे पूर्व मैं पाँच स्कूलों में पढ़ा चुकी थी। यहाँ के अनुभव कुछ अलग थे, इसलिए मैं लिखने को विवश हो गई। स्वास्थ्य कारणों से दो साल बाद मुझे यह स्कूल छोड़ना पड़ा, अन्यथा यहाँ से एक विशेष लगाव हो गया था। उनके व्यक्तित्व में मैंने निम्न कुछ बातें देखीं -

1. प्रिंसीपल बेदी जी को सुबह प्रार्थना के समय स्कूल के मेन गेट पर खड़े होकर बच्चों को रिसीव करते देखा, उन पर पूरा ध्यान देते देखा। बरसात में हाथ में छाता लेकर खड़े देखा। एक-एक बच्चे का हाथ पकड़कर स्कूल के अन्दर करते पाया। ज़्यादातर स्कूलों के मालिक प्रार्थना के समय उपलब्ध ही नहीं होते, वहाँ यहाँ एक-एक बच्चे की इतनी फिक्र!
2. बेदी सर स्कूल की सभी कक्षाओं में चक्कर लगाते समय यह देख लेते कि वहाँ टीचर नहीं है, तो उन बच्चों को ठीक से पढ़ाई करने हेतु प्रेरणा देने लग जाते हैं। उन्हें अच्छी-अच्छी बातें बताना।
3. बेदी सर को अधिकतर बच्चों के नाम याद हैं। वह उन्हें उनके नाम से बुलाते हैं। इससे बच्चों को एक विशेष अपनापन लगता है। एक छोटा बच्चा बहुत गालियाँ देता था। उस पर अलग से ध्यान दिया। उसे स्कूल से निकाला जा सकता था। इससे पूर्व कई स्कूल उसे निकाल चुके थे। आपने संभाला। समय लगा, लेकिन सुधार दिया।
4. Parents Teacher Meeting के दिन तथा अन्य दिनों एक-एक माता-पिता से वह बहुत तसल्ली से बात करते थे। उन्हें अपने पास बैठाकर बच्चे के विकास को लेकर डीटेल में तसल्ली से बात करते हैं, इसमें उनका बहुत-सा समय खर्च भी होता है।
5. बेदी सर सभी अध्यापिकाओं को दिल से सम्मान देते हैं। टीचर्स के साथ बहुत सरलता से बात करते हैं। उनकी वाणी में अहं नहीं झलकता। उनकी ग़लती पर बहुत सलीके से अलग से बताते हैं। एक बार एक अध्यापिका ठीक से काम नहीं कर रही

जीवन कठिन तब लगता है जब हम स्वयं को बदलने की
बजाय परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करते हैं।

थी, उसे निकालना था। उसे क्या कहें, कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। मुझे बुलाकर सलाह ली कि हम उन्हें कैसे मना करें ताकि उनके दिल को चोट न लगे। आपका अपना दिल बहुत कोमल है।

6. स्कूल समय के उपरान्त कभी किसी अध्यापिका से फ़ोन पर बात नहीं करते। बहुत ज़रूरी हो तो अपनी धर्मपत्नी से फ़ोन करवाते हैं। आप शिष्टाचार का बहुत ख्याल रखते हैं। किसी अध्यापिका की शादी होने पर यदि उसे स्कूल छोड़ना पड़े, तो उसे बेटी के समान प्यार देकर विदा करते हैं, कई बार रो भी पड़ते हैं।
7. आप स्कूल की चीज़ों व गमलों की खुद परवाह करते हैं। बरसात के दिनों में यदि किसी गमले में पानी भरा देख लें, तो स्वयं निकालते व माली से कहकर निकलवाते देखा है।
8. आप अपनी धर्मपत्नी श्रीमती तरविन्द्र सिंह जी (वन्दना) बेदी का बड़ा ख्याल रखते हैं व पूरा सम्मान देते हैं। एक बार उन्हें बेटर लाइफ में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया, उधर धर्मपत्नी का इलाज चल रहा था, वह उनके साथ गए, मुख्य अतिथि के रूप में आना स्वीकार न किया। इनकी धर्मपत्नी बहुत हिम्मत वाली थीं। कैंसर की बीमारी से ग्रस्त हो गईं लेकिन आखिरी वक्त तक हिम्मत से मुकाबला करती रहीं। बेदी सर ने उनका इस कष्ट के समय पूरा सहयोग व साथ दिया। उनके देहान्त पर अवश्य मैंने उन्हें बहुत दुःखी पाया।
9. बेदी सर ने मुझे स्कूल में कार्य करने के दौरान अपने स्कूल में बच्चों को नैतिक शिक्षा देने का सेवा कार्य सौंप ही रखा था। इसके भिन्न प्रत्येक शनिवार व शुक्रवार का आधा दिन मुझे फ्री कर दिया कि आसपास के स्कूलों में जाकर बच्चों को संस्कार दो। कितने स्कूलों में नीति शिक्षा करवाने हेतु मुझे साथ लेकर गए। उनके मन में किसी दूसरे स्कूल को लेकर ईर्ष्या का भाव नहीं है। वह अकसर कहते हैं कि मैं चाहता हूँ सभी संस्थाएं ऊपर उठें। अन्यथा अपने स्कूल के टीचर को छुट्टी देकर अन्य स्कूलों के बच्चों के भले के लिए कोई प्रिंसीपल क्यों भेजेगा।

उपरोक्त कुछ बातों को देखकर मेरा मन कहता है कि बेदी सर एक विशेष प्रिंसीपल हैं। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला। उनका शुभ हो!

– रेणु वाधवा (रुड़की)

दो ही चीज़ें ऐसी हैं जिसे देने से किसी का कुछ नहीं जाता –
एक मुस्कुराहट, दूसरी दुआ।

भाव प्रकाश

(17-21 सितम्बर, 2025)

इस शिविर में मुझे पता चला कि जो-जो गुण मनुष्य में होते हैं उनमें से कई गुण पशु-पक्षियों में भी होते हैं। मैं यह संकल्प लेता हूँ कि मैं इन गुणों को बढ़ाने की कोशिश करूँगा तभी मैं पशु-पक्षियों से ऊपर हो सकूँगा और मनुष्य कहला सकूँगा। मोबाइल ज़्यादा देखने की नीच भाव को कम करने की भी कोशिश करूँगा। मैं ज़्यादा से ज़्यादा मिशन की सेवा कर सकूँ, ऐसी है शुभकामना।

– अर्पित सिंघल (पंचकूला)

इस बार रुड़की शिविर को भावों के स्तर पर समझ पा रहा हूँ। मैं देवाश्रम में हमेशा अपना समय मुख्यत: निम्न सेवाओं के रूप में देता रहूँगा।

1. पर्यावरण मित्र – पौधों (Plants) को उगाना और उनकी देखभाल करना।
2. सफाई मित्र – देवाश्रम के प्रत्येक हिस्से की साफ़-सफ़ाई में हर प्रकार से सहयोग करना। आप सभी से मिली सेवाओं के लिए हृदय की गहराई से आभार करता हूँ और भगवान् देवात्मा की शिक्षा को मैं हमेशा ग्रहण करता रहूँगा!

– भारतवीर (साहिबाबाद)

मैं पहला धन्यवाद अपने भाई को देती हूँ, जिन्होंने मुझे इस स्थान से जोड़ा। जब से मैं भगवान् देवात्मा से जुड़ी हूँ, एक निराली होश भगवन् की शिक्षा से मिली है – अपने बड़ों के उपकारों को याद करो। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे इतने अच्छे धर्म सम्बन्धी मिले, इतना प्यार और सेवाएं मिली। चण्डीगढ़ में मेरा ऑप्रेशन हुआ और सब धर्मसम्बन्धियों ने मेरी इतनी सहायता की। अगर मैं भगवन् की शरण में नहीं आती तो मुझे यह सब कभी नहीं मिल पाता। सबका धन्यवाद! सबका शुभ हो!

– श्रीमती शिमलावती (भायला)

मेरा सौभाग्य रहा कि मैं 14-15 साल का था जब भगवन् ने मुझे दर्शन दिये। मैं सो रहा था और सपने में दिखाई दिया कि एक कमरे में मुझे भगवान् ने एक बहुत सुन्दर नीली रोशनी के साथ दर्शन दिए। यहाँ आकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है, बहुत कुछ परलोक के बारे में जानने को मिला है। मैं भगवान् देवात्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

– अनिल अग्रवाल (अम्बाला शहर)

जिनकी छवि मन में बसी हो, वे दूर रहकर भी हृदय के बहुत करीब रहते हैं।

थोड़े समय पहले मैंने जीवन विज्ञान वर्कशॉप को सुना था, जिससे मुझे महसूस हुआ कि हम अपनी कृतज्ञता को कितना बढ़ा सकते हैं। उसके बाद से मैं सुबह से शाम तक हर छोटी-छोटी चीज़ का धन्यवाद करता हूँ। इस शिविर में उपस्थित होकर मुझे यह पता लगा है कि हम अपने भावों को धीरे-धीरे कितना उच्च बना सकते हैं केवल छोटे-छोटे प्रयासों के माध्यम से। मैं यहाँ पर यही प्रार्थना करता हूँ कि मेरे अन्दर और अच्छे भाव पैदा हो सकें। भगवान् देवात्मा को मेरा धन्यवाद!

– श्री सुदेश गुप्ता (विकासनगर)

मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। शिविर में आने के बाद मुझे लगा कि हमें अभी कितना कुछ सीखना बाकी है। हमें अपनी अच्छाई या ईमानदारी के बदले में दूसरों से कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। यह हमारी अपनी जिम्मेदारी है कि हम अच्छे बने रहें।

– यशपाल सिंघल (पंचकूला)

जब श्रीमान् जी साधन कराते हैं तो मैं और मेरी मित्र इन्दू जी सुनते हैं, तो यह महसूस होता है कि साधन हम लोगों पर ही हो रहा है। हमारे अन्दर जो नीच भाव हैं, दिखाई देते हैं और लगता है कि यह सब हमें ही सुनाया जा रहा है। साधन के बाद जब हम आपस में बाते करते हैं, तो हम बोलते हैं कि आज तो सारा साधन मेरे ऊपर ही हुआ है। क्योंकि अपनी सब कमियाँ साफ़-साफ़ दिखने लगती हैं, इस शिविर में आत्मा के बारे में हमने काफ़ी कुछ जाना है। आत्मा का पता तो हमें है लेकिन हम किसी को समझाते हैं, तो समझा नहीं पाते। एक बार एक स्कूल में एक 10वीं कक्षा की बच्ची को मैंने बताया कि जब हम ऊपर जायेंगे, तो हमें हमारे जैसे ही लोग मिलेंगे? तो उसका जवाब था कि मैं ऐसी जगह नहीं जाना चाहती, जहाँ पर मेरे अपने ही न हों। यही बात मैं भी सोचती हूँ कि अगर हमारे अपने नहीं होगें तो हम क्या करेंगे। इसलिए हमें अपने सभी को साथ में लेकर उन्हें ऊपर उठाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वहाँ जाकर भी साथ रह सकें।

– रेणु वाधवा (रुड़की)

आप बहुत अच्छी मानवता की सेवा कर रहे हैं। हम सभी भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं को जीवन में उतारें, यही मेरी अभिलाषा है।

–अरविन्द शर्मा (रुड़की)

सुख मनुष्य के घमण्ड की परीक्षा लेता है और दुःख मनुष्य के धीरज की परीक्षा लेता है।

मेरी बेटी भी यहाँ आयी थी, उसने एक लेक्चर सुना, उसके बाद से उसमें कुछ बदलाव आये हैं। वह अपना सामान अपने कमरे में ठीक ढंग से रखने लगी है।

– हिमानी अरोड़ा (रुड़की)

मैं सब लोगों के साथ एक किस्सा साँझा करना चाहता हूँ। एक दिन बुधवार की सभा में श्रीमान् जी ने प्रश्न किया कि हम यहाँ किसलिए आते हैं। तो मेरे मन में एक बात आयी, जो मैंने किसी से कही नहीं कि 'हम लोग यहाँ बेज्जती कराने आते हैं।' जब यह समझ आती है कि एक मनुष्य में जो-जो उच्च भाव होने चाहियें और वे भाव मेरे अन्दर नहीं हैं, तो ऐसा लगता है कि यह जीवन किसी काम का नहीं है। आज भी श्रीमान् जी ने एक बात बताई कि भगवान् देवात्मा तो हमारी पूजा के पात्र हैं लेकिन क्या मैं उनकी पूजा करने का अधिकारी हूँ? क्या मेरे अन्दर वे योग्यताएँ है कि मैं उनकी पूजा कर सकूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मैं तो नहीं हूँ। मैं यह चाहूँगा कि भगवान् देवात्मा और आप सब लोगों के आशीर्वाद से आने वाले समय में मैं उनकी सेवा और पूजा करने का अधिकारी बन सकूँ।

– अंकित सिंघल (रुड़की)

कृतज्ञता सुमन

आजकल मनुष्य मात्र के दिन चल रहे हैं। जिसमें मुझे कहा गया कि 'कृतज्ञता सुमन' पुस्तक का पाठ विचार करके लेखों को निचोड़ निकाला जाए।

जब मैंने पुस्तक खोली तो सबसे पहले मेरे सामने श्रीमान योगेन्द्रपाल जी के द्वारा लिखा गया लेख आया जो मुझे बेहद प्रेरणादायक महसूस हुआ। श्रीमान् जी की बड़ी बहन जो अपने पति के परलोकगमन के पश्चात उनके साथ रहती थी। अपनी ज़मीन मकान सब अपनी भाभी के नाम कर गई। श्रीमान योगेन्द्रपाल जी व उनकी पत्नी शशि जी किराए के मकान में रहते हैं। कोई और होता तो स्वयं का मकान लेता। लेकिन उन्होंने उनका सारा धन सत्यधर्म बोध मिशन को दान करके मिसाल कायम कर दी। उनके सभी पारिवारिक जनों के लिए दिल से शुभकामना निकलती है।

– रेणु वाधवा (रुड़की)

आपके भाव

शुभ हो श्रीमान् सोतम गुरु जी का हर प्रकार से शुभ हो! श्रीमान् जवाहर लाल

सबका प्रिय वहीं होता है जो व्यवहार में बच्चा, स्वभाव में अच्छा
और काम में सच्चा होता है।

जी का हर प्रकार से शुभ हो। इनके द्वारा हमें भगवन् का दर मिला। यहाँ आकर हमारा जितना भला हुआ है। मैं शायद लिखकर या शब्दों में बयान नहीं कर सकती। हमारे जीवन की पूरी ही काया पलटी है। मेरे पति के अन्दर नशे के सारी बुरी आदतें थी, कोई भी नशा ऐसा नहीं था जो वो नहीं करते थे, यानि सब प्रकार का नशा करते थे। जब श्रीमान् जवाहर लाल जी और सोतम गुरु जी हमारे घर पर आये, उनके अच्छे विचारों का हमारे ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और मेरे जीवनसाथी पहले से ही उनके प्रति श्रद्धा रखते थे, तो असर बहुत जल्दी हुआ और उन्होंने नशा त्याग दिया। मेरे अन्दर बहुत परिवर्तन आया। पहले मैं बहुत जिद्दी स्वभाव रखती थी, बच्चों पर चिल्लाना, छोटी-छोटी बात पर गुस्सा करना, ये सब मेरे स्वभाव में था मैं इतना पूजा-पाठ, व्रत, क्रमकाण्ड सब करती थी, पर स्वभाव में कोई फर्क न था। पर अब मुझमें विनम्रता, सहजता, प्यार आने लगा है, मुझे खुद को बहुत अच्छा महसूस होता है। मैं भगवन् के प्रति, सोतम गुरु जी के प्रति, श्रीमान् जवाहर लाल जी के प्रति, सभी धर्मसार्थियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। बहुत से सत्संग, कीर्तनों में पहले जाती थी पर ऐसे, विचार ऐसे भाव, कभी महसूस नहीं हुए, जो कि यहाँ मिशन में आकर मिलते हैं, पहले ज्ञान की अनुभूति होती थी पर अब बोध के साथ काम करती हूँ कितना परिवर्तन आया! जितना धन्यवाद दूँ उतना कम है। सम्बन्धों के महत्त्व को जाना कितने सम्बन्ध हैं। कितने उपकारी हैं। हमने कितने उपकार पाये हैं। चारों जगतों को जाना, जिनके बारे में पहले कभी न सुना था यहाँ आकर जाना कि चारों जगतों के द्वारा ही मेरा जीवन है। नियमों को जाना, प्रकृति को जाना, उसके नियमों को जाना, अनुशासित रहना सीखा, स्वयं में ख़ुश रहना सीखा, सफाई का बोध, खाने का बोध, आत्मा का बोध कि जिसके द्वारा हमारा शरीर चलता है और कितने ही बोध विकसित हुए हैं, बहुत आभारी हूँ। भगवान् के प्रति, मिशन के प्रति, धर्मसार्थियों के प्रति, विश्व के प्रति आभारी हूँ। शुभ हो! सबका शुभ हो!

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद! मैं दूसरों की बदौलत हूँ सबसे बढ़कर मेरे माता-पिता जी का हर प्रकार से शुभ हो! श्रीमान् नवनीत जी के इस मन्त्र को हर पल याद रखूँ, मैं नहीं, मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया;जो भी मेरे पास है, वो धन किसी का है दिया।

– सीमा चुग (बेहट

जो फ्री है वही सबसे ज़्यादा कीमती है,
हवा, पानी, नींद, शान्ति और हमारी सांसें।

प्रेरणादायक वर्कशॉप

उच्च जीवन प्रशिक्षण संस्थान और मानव चरित्र निर्माण समिति के संयुक्त तत्वावधान में 27 और 28 अक्टूबर को पदमपुर में स्कूली छात्रों के लिए एक बेहतर जीवन (Better Life) निर्माण कार्यशाला विभिन्न विद्यालयों में का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य बच्चों को जीवन में सफलता और खुशहाली प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल सिखाना था।

इस प्रेरणादायक कार्यक्रम में निम्नलिखित गणमान्य व्यक्तियों ने बच्चों का मार्गदर्शन किया –
राजेश रामानी जी,
श्री गुरुचरण सिंह पाहवा जी,
जोरा सिंह नागी जी,
गुलशन धमीजा जी,
तथा शंकर बंसल जी,

कार्यक्रम के दौरान 'एक शिक्षक', 'एक तोहफ़ा आज का' और तम्बाकू निषेध से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पुस्तकें वितरित की गई। यह पहल छात्रों को स्वस्थ और सफल जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने पर केन्द्रित थी।

उपरोक्त सेवा निम्न विद्यालयों में दी गई –

1. BDIS पब्लिक उच्च माध्यमिक स्कूल, 2. KIDS Paradise Convent School
3. सुरेन्द्र कौर मैमोरियल उच्च माध्यमिक विद्यालय एक शिक्षक पुस्तक वितरण
4. शिवालिक चिल्ड्रेन्स एकेडमी 5. एस.एस. सीनियर सेकेंड्री स्कूल

दो दिन शाम 7:30 से 8:30 तक परिवार जनों के लिए शुभ धाम में श्रीमान् रामानी जी द्वारा सभा करवाई गई। 15 जनों ने लाभ लिया।

दिनांक 29 अक्टूबर, 2025 श्री गंगानगर (राजस्थान) विद्यालयों के विद्यार्थियों को जीवन के नियमों के आधार पर छोटी-छोटी बातों बातों से बेहतर बनाने के उददेश्य से एक प्रेरणादायक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम निम्नलिखित विद्यालयों में आयोजित किया गया – 1. नोबल स्कॉलर एकेडमी और सैनिक स्कूल, 2. राजकीय सीनियर सेकेंडरी गर्ल्स स्कूल, 3. आस्था एकेडमी स्कूल, 4. राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल तथा, 5. विद्यार्थी शिक्षा सहयोग समिति

प्रकृति कभी अपनी दी हुई वस्तुओं का अहंकार नहीं करती, लेकिन उपयोग करने पर सबक ज़रूर सिखाती है।

सेकेंडरी स्कूल।

मुख्य वक्ता और मार्गदर्शन – कार्यशाला में श्री राजेश रामानी (भोपाल) और श्री शंकर सलूजा जी (श्री गंगानगर) ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर, बच्चों को 'एक तोहफ़ा आज का', 'एक शिक्षक' नामक पुस्तकें और सत्यदेव संवाद' भेंट की गई। सभी अध्यापक जनों ने इस प्रेरणादायक पहल के लिए धन्यवाद व्यक्त किया और भविष्य में भी इस प्रकार की ज्ञानवर्धक कार्यशालाएँ आयोजित करने हेतु आमंत्रित किया। सभी सहयोगी जनों का धन्यवाद।

रात जो नाटकीय बन गई – एक आदमी चालीस के खिलाफ!

02 सितम्बर, 2010 – मौर्य एक्सप्रेस पश्चिम बंगाल के घने जंगलों से गुज़र रही थी जब आतंक का हमला हुआ। चालीस हथियारबन्द लुटेरों ने डिब्बों में धावा बोल दिया, चाकू, डंडे और तलवारें लहराते हुए, गहने, पर्स, लैपटॉप और जान की बचत छीन ली। यात्री डर के मारे ठिठक गए, बचने की दुआ कर रहे थे। उनमें 35 वर्षीय पूर्व गोरखा नायक बिष्णु श्रेष्ठ चुपचाप लेकिन सतर्क बैठे थे।

फिर वह क्षण आया जिसने उनकी आत्मा को झकझोर दिया जब एक 18 वर्षीय लड़की को उसके माता-पिता के सामने घसीटा गया क्योंकि लुटेरे उस पर हमला करने की कोशिश कर रहे थे। बस यही चिंगारी थी। बिष्णु की योद्धा भावना भड़क उठी। अपने गोरखाओं के घुमावदा ब्लेड, खुखरी के अलावा कुछ नहीं लिए, वह तूफान की तरह भीड़ पर टूट पड़े। बीस रोमांचक मिनटों में उसने अराजकता को चीरते हुए तीन लोगों को मार डाला, आठ को घायल कर दिया और बाकी को रात में बिखेर दिया। एक हमलावर को ढाल बनाकर, उसने भय को आजादी में बदल दिया। यात्री राहत की साँस ले रहे थे, यह जानकर कि उन्हें सेना ने नहीं, बल्कि एक आदमी के साहस ने बचाया था। विष्णु के घाव गहरे थे, लेकिन उसका सम्मान उससे भी ऊँचा था। जब लड़की के परिवार ने उसे पैसे देने की पेशकश की, तो उसने उन्हें यह कहते हुए मना कर दिया। 'युद्ध में दुश्मन से लड़ना एक सैनिक के रूप में मेरा कर्तव्य है। ट्रेन में बदमाशों से मुकाबला करना एक इन्सान के रूप में मेरा कर्तव्य था।'

जीवन में एक-दूसरे का साथ छोड़ने की बजाय क्रोध, अहंकार,
शिकायतें और नाराज़गी को छोड़ें।

प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा

पिछले दिनों प्रो. नवनीत जी विभिन्न शिक्षण संस्थानों एवं अन्य अवसरों पर प्रेरणास्पद उद्बोधनों से सेवाकारी प्रमाणित हुए – (सितम्बर और अक्टूबर)

लक्सर – 27 सितम्बर, 2025 को रुड़की से प्राय: 25 कि.मी. दूर सन्त ज्योतिबा फुले सीनियर सैकण्डरी स्कूल, लक्सर में प्राय: 150 विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। डॉ. रवीन्द्र जी सैनी, श्री विनोद जी मिश्रा एवं अक्षित जी साथ में गए। 'एक तोहफ़ा आज का' नामक पुस्तक वितरित की गई।

मुंडाखेड़ा – 27 सितम्बर, 2025 को लक्सर निकट गाँव मुंडाखेड़ा में स्थित मैत्री कन्या गुरुकुल में उपरोक्त टीम ने विजिट किया। वहाँ संरक्षण पा रही प्राय: 40 बच्चियों को सम्बोधित किया। उनके भोजन आदि हेतु मिशन की ओर से 5100/– दान में दिए गए। 'शुभकामना' नामक पुस्तक की प्रतियाँ वितरित की गईं।

मंगलौर – 11 अक्टूबर, 2025 रुड़की से प्राय: 12 कि.मी. दूरी पर स्थित गुरु ज्ञान सागर पब्लिक स्कूल, मंगलौर में प्रात: 8:15 बजे से एक घण्टा 'Excellence in Teaching' विषय पर उद्बोधन दिया। प्राय: 40 अध्यापक लाभान्वित हुए। 'एक शिक्षक' नामक पुस्तक वितरित की गई।

गुरुकुल नारसन – 11 अक्टूबर, 2025 को रुड़की से 22 कि.मी. दूर गाँव गुरुकुल नारसन में स्थित स्नो व्हाइट पब्लिक स्कूल में प्राय: 60 विद्यार्थियों को बेटर लाइफ की वर्कशॉप करवाई। प्रिंसीपल एस के दहिया जी ने पूरा उत्साह दिखाया व सहयोग किया।

पुरका जी – 11 अक्टूबर, 2025 को रुड़की से 28 कि.मी. दूर सनसाइन एकेडमी पुरकाजी में प्राय: 80 विद्यार्थियों को बेटर लाइफ की वर्कशॉप करवाई। प्रिंसीपल बेदी जी ने पूरा उत्साह दिखाया व सहयोग दिया। 'एक तोहफा आज का' नामक पुस्तक की कुछ प्रतियाँ भी वितरण हेतु लीं।

भूराहेड़ी – 11 अक्टूबर, 2025 को ही पुरकाजी के निकट गाँव भूराहेड़ी में स्थित सरकारी मिडल स्कूल में जाकर प्राय: 20 बच्चों को नीति शिक्षा करवायी गई। इस स्कूल में कुछ वर्ष पूर्व मिशन की ओर से एक कम्प्यूटर भी दान में दिया गया था। जिसका विद्यार्थी भरपूर प्रयोग कर रहे हैं।

उपरोक्त चारों स्कूलों में उद्बोधनों हेतु डॉ. नवनीत के साथ श्रीमती रेणु वधवा जी एवं श्री अक्षित रोहिल्ला साथ में गए।

बड़ों की छत्र-छाया हमारी संस्कृति और संस्कार हैं, ये बोझ नहीं
हमारा सुरक्षा कवच हैं, इन्हें सम्भाल कर रखें।

बराड़ा – 17 अक्टूबर, 2025 को जय पब्लिक स्कूल अधोई (निकट बराड़ा) के वार्षिक दिवस पर आयोजित समारोह में प्रो नवनीत जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। प्राय: 800 उपस्थित जनों को आपने प्रेरणादायी उद्बोधन दिया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कार पर बल दिया। इस अवसर पर रुड़की से श्रीमती पूनम जैन एवं उनके पौत्र शुभ जैन साथ में गए।

रुड़की – साप्ताहिक बुधवार का साधन 15 अक्टूबर, 2025 को सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रद्धाभाव पर 50 वें एपिसोड के सन्दर्भ में उद्बोधन दिया गया। यह समापन एपिसोड था। श्रद्धाभाव पर इन पचास एपिसोडस की सीरीज यूट्यूब पर Shubhho Roorkee नामक चैनल पर उपलब्ध है। तदुपरान्त 22 अक्टूबर, 2025 से कृतज्ञता भाव पर सीरीज प्रारम्भ कर दी गई है।

श्री गंगानगर – 26 अक्टूबर, 2025 को स्थानीय अरोड़वंश वेलफेयर सोसायटी के आग्रह पर आप मुख्य वक्ता के रूप में श्री गंगानगर पहुँचे। स्थानीय अमर पैलेस के हॉल में ज़िला गंगानगर के प्राय:230 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपने उपस्थित छात्रों, उनके अभिभावकों एवं समाजसेवियों को उच्च जीवन जीने व चरित्रवान बनने के लाभों को चरित्रार्थ किया। बड़ा अच्छा वातावरण बना तथा प्राय: 800 जन लाभान्वित हुए। 'नई सोच नया सवेरा' नामक पुस्तक सम्मान पाने वाले छात्रों को वितरित की गई।

उसी दिन सायं श्री भोज राज रमा जैन के निवास पर 'खुशहाली की ओर' विषय पर प्रभावशाली उद्बोधन दिया, जिससे प्राय: 35 जन लाभान्वित हुए, इनमें छ: धर्मसाथी पदमपुर से भी तशरीफ लाए। इस अवसर पर श्री राजेश रामानी जी साथ रहे। हनुमानगढ़ से श्री गंगानगर तक लाने व वापस पहुँचाने की सेवा श्री मुरारी लाल जी गक्खड़ एवं प्रदीप कुक्कड़ जी ने की। सबका शुभ हो!

रुड़की – 28 अक्टूबर, 2025 को आई.आई.टी. रुड़की में आयोजित Biomaterials and Healthcare नामक International conference में Keynote Speaker के रूप में आपको आमन्त्रित किया गया। Science and Conscience विषय पर आपने प्रभावशाली उद्बोधन दिया, जिससे देश-विदेश के प्राय: 100 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

रुड़की – 31 अक्टूबर, 2025 को प्रात: स्थानीय कन्हैयालाल

जो क्रोध मैं दूसरों के लिए रखता हूँ, वो सबसे पहले मुझे ही जलाता है।

पोलीटेकनिक में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) से जुड़े प्राय: 70 छात्रों को प्रो.नवनीत जी व श्री राजेश रामानी जी ने सम्बोधित किया। सभी ने ध्यान से सुना व लाभ उठाया।

31 अक्टूबर, 2025 को सायं The Institution of Engineers (India) के रुड़की लोकल सेन्टर के हॉल में इंजीनियर्स व कुछ अतिथियों को प्रो. नवनीत जी ने 'Graceful Behaviour' विषय पर सम्बोधित किया। बड़ा अच्छा वातावरण बना। श्री रामानी जी ने बुक स्टाल संभाला। सुबह व सायं के सत्रों में प्राय: 1100/- की पुस्तकें बिकीं।

मुजफ्फ़राबाद (सहारनपुर) - 19 नवम्बर, 2025 को स्थानीय वैदिक इण्टर कॉलेज में 25 शिक्षकों को लेकर प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया व मानवीय मूल्यों को स्वयं के जीवन में उतारकर बच्चों को संस्कारवान् बनाने की प्रेरणा दी। तत्पश्चात् प्राय: 900 बच्चों को नीति शिक्षा करवाई। स्कूल के प्रबन्धक श्री सुनील गुप्ता जी (जो हमारे धर्मसाथी भी हैं) ने यह सत्र रखवाये। श्री मेघराज सैनी जी (फतेहपुर) साथ गए।

देहरादून - 19 नवम्बर, 2025 को International Men's Day पर उत्तरांचल युनिवर्सिटी में वक्ता के रूप में प्रो. नवनीत जी को आमन्त्रित किया गया था। प्राय: 200 विद्यार्थियों व शिक्षकों को सही पुरुषत्व का अर्थ समझाते हुए प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया। मुजफ्फ़राबाद (सहारनपुर) व देहरादून में श्री अक्षित रोहिल्ला साथ गए एवं बुक स्टॉल संभाला।

दूसरों की ग़लतियाँ

यदि हम व्यक्तियों का उनकी ग़लतियों के कारण तिरस्कार करने लगें और उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करने लगें, तो एक दिन हम दुनिया में अकेले रह जायेंगे, क्योंकि कोई भी व्यक्ति पूर्ण रूप से शुद्ध, ज्ञानी व सात्त्विक नहीं है, अर्थात् सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ कमी होती है। अत: आओ, व्यक्तियों की अच्छाइयों व गुणों को पहचानें और उनको प्यार करें तथा उनकी कमियों व अवगुणों को दूर करने का उचित ढंग से प्रयास करें।

समय और शब्द दोनों का उपयोग लापरवाही के साथ न करें
ये दोनों दोबारा नहीं आते हैं न मौका देते हैं।

आत्मबल विकास महाशिविर (17-20 दिसम्बर, 2025)

भावपूर्ण निमन्त्रण

17-12-2025, बुधवार

प्रातः 11:30-12:30 बजे : प्रार्थना, शारीरिक एवं आत्मिक हीलिंग सत्र
सायं 4:00-7:00 बजे : जीवन का सच्चा आधार (एक वर्कशॉप)

18-12-2025, बृहस्पतिवार

प्रातः10:00-12:00 बजे : जीवन की सुन्दरता (एक संगोष्ठी)
सायं 5:00-7:00 बजे : क्या समझा या क्या पाया ? (एक चिन्तन)
रात्रि 8:30 बजे : भजन संध्या

19-12-2025, शुक्रवार

प्रातः 9:00 बजे : धर्म का सत्य स्वरूप (साधन सत्र)
प्रातः 10:15 बजे : विश्वास की परख (साधन सत्र)
दोपहर 11:30 बजे : देवाश्रम (फेज़ - II) का उद्घाटन
सायं 3:30-5:00 बजे : बाल सभा
सायं 5:30 बजे : देवात्मा - अमृत के भण्डार (साधन सत्र)
रात्रि 8:30 बजे : परिचय एवं संकल्प सत्र

20-12-2025, शनिवार

(परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का शुभ जन्म दिवस)

प्रातः 6.00 बजे : भजन, जन्म वेला की महिमा
प्रातः 9.00 बजे : देवात्मा का जीवनव्रत और उनके लिए हमारी कृतज्ञता (साधन सत्र)
प्रातः 11:30 : शिष्य ग्रहण एवं समापन सत्र

शिविर स्थल - हरमिलाप धर्मशाला, सॉकेत, रुड़की

सम्पर्क सूत्र - 99271-46962, 94672-47438

(अपने पहुँचने की जानकारी दें। इसके लिए QR Code Scan करें)

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (92585-15124), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़(94665-10491), पदमपुर (93093-03537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई(98707-05771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (80542-66464)

**स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, डी - 05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242**